Literacy for a Billion

Movie: Hum Dil De Chuke Sanam
Year: 1999

Song: Ankhon Ki Gustakhiyan
Lyricist: Mehboob

आँखों की गुस्ताख़ियाँ माफ़ हो
ओ आँखों की गुस्ताख़ियाँ माफ़ हो

इक टुक तुम्हें देखती हैं
जो बात कहना चाहे जुबां
तुमसे ये वो कहती हैं

आँखों की शर्मो-हया माफ़ हों
तुम्हें देखके छुपती हैं
उठीं आंखें जो बात ना कह सकीं
झुकी आंखें वो कहती हैं

आँखों की
आँखों की गुस्ताख़ियाँ माफ़ हों

काजल का इक तिल
तुम्हारे लबों पे लगा लूँ
ला ला ...
ओ चंदा और सूरज की नज़रों से
तुमको बचा लूँ
ओ पलकों की चिलमन में आओ
मैं तुमको छुपा लूँ

आ आ ...

यादों की ये शोख़ियाँ माफ़ हों
हरदम तुम्हें सोचती हैं
जब होश में होता है
जहाँ मदहोश ये करती हैं
आँखों की शर्मो-हया माफ़ हों

ये ज़िन्दगी आपकी ही अमानत रहेगी
हे हे
दिल में सदा आपकी ही मोहब्बत रहेगी
हे हे
इन सांसों को आपकी ही ज़रूरत रहेगी
हो इस दिल की नादानियाँ माफ़ हो
ये मेरी कहाँ सुनती हैं
ये पल पल जो होते हैं बेकल सनम
तो सपने नए बुनती हैं

आँखों की
आँखों की गुस्ताख़ियाँ माफ़ हो
शर्मो-हया माफ़ हो
हा हा हा...

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.